महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय

MAHATMA GANDHI CENTRAL UNIVERSITY

(Established by an Act of Parliament)

Temp Camp Office, Zila School Campus, Motihari,

District: East Champaran, Bihar - 845401

www.mgcub.ac.in

लोकनायक जयप्रकाश नारायण

पाठ्यक्रम – GPS4009 (प्रमुख गाँधीवादी विचारक)

डॉ. जुगल किशोर दाधीच

सह आचार्य

गाँधी एवं शान्ति अध्ययन विभाग

लोकनायक जयप्रकाश नारायण

जन्म : 11 अक्तूबर, 1902 (बलिया, बिहार)

निधन : 8 अक्तूबर, 1979 (पटना)

महत्वपूर्ण कार्य : सम्पूर्ण क्रान्ति आन्दोलन

पुरस्कार : भारत रत्न, मैग्सेसे पुरस्कार

जयप्रकाश नारायण और सम्पूर्ण क्रान्ति आन्दोलन

- भ्रष्टाचार मिटाना, बेरोजगारी दूर करना, शिक्षा में क्रान्ति लाना आदि ऐसी चीजें हैं जो आज की व्यवस्था से पूरी नहीं हो सकतीं, क्योंकि वे इसी व्यवस्था की ही उपज हैं। वे तभी पूरी हो सकती हैं जब सम्पूर्ण व्यवस्था बदल दी जाए और सम्पूर्ण व्यवस्था के परिवर्तन के लिए क्रान्ति, "सम्पूर्ण क्रान्ति" आवश्यक है।

- सम्पूर्ण क्रान्ति में सात क्रान्तियां शामिल हैं - राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक, शैक्षणिक व आध्यात्मिक क्रान्ति। इन क्रान्तियों से मिलकर "सम्पूर्ण क्रान्ति" बनेगी।

जयप्रकाश नारायण के समाजवाद पर गाँधी के विचार

- महात्मा गांधी, जयप्रकाश नारायण को भारत में समाजवाद का अधिकृत विद्वान मानते थे। उनके शब्दों में “वे सामान्य कार्यकर्ता नहीं हैं। वे समाजवाद के अधिकारी हैं।”

- जयप्रकाश नारायण समाजवाद को आर्थिक-सामाजिक पुनर्रचना का सिद्धांत मानते हैं। वे समाज के सभी पक्षों का पुनर्गठन करना चाहते हैं। उनका उद्देश्य सम्पूर्ण समाज का समन्वित और सन्तुलित विकास करना है।

जयप्रकाश नारायण के राजनीतिक विचार

- अगर आप सचमुच स्वतंत्रता, स्वाधीनता की परवाह करते हैं, तो बिना राजनीति के कोई लोकतंत्र या उदार संस्था नहीं हो सकती। राजनीति के रोग का सही मारक, और अधिक एवं बेहतर राजनीति ही हो सकती है, राजनीति का अपवर्जन नहीं।

- पश्चिम की वर्तमान राजव्यवस्था का आधार विकीर्ण मानव-समाज है, जिसमें राज्य का निर्माण वैयक्तिक ढांचे पर हुआ है। किन्तु यह आधार गलत है, क्योंकि इसमें मनुष्य की सामाजिकता और समाज के वैज्ञानिक संघटन दोनों की उपेक्षा है।

जयप्रकाश नारायण और लोकतंत्र

- लोकतंत्र की समस्या मूलतः नैतिक समस्या है। संविधान, शासन-प्रणाली, दल, निर्वाचन - ये सब लोकतंत्र के अनिवार्य अंग हैं। किन्तु जब तक लोगों में नैतिकता की भावना न रहेगी, लोगों का आचार-विचार ठीक नहीं रहेगा, तब तक अच्छे से अच्छे संविधान और राजनीतिक प्रणाली के बावजूद लोकतंत्र ठीक से काम नहीं कर सकता।

- वर्तमान उद्योगवाद - फिर वह भले ही पूंजीवादी हो, समाजवादी या कम्युनिस्ट हो - ने जिस भौतिकवादी प्रवृत्ति की सृष्टि कर रखी है, उसके साथ लोकतंत्र का मेल नहीं खाता। दोनों साथ नहीं चल सकते। मेरी मान्यता है कि यदि मनुष्य वास्तविक रूप से स्वतंत्रता और स्वशासन की स्थिति का उपभोग करना चाहता है, तो उसे स्वेच्छा से अपनी जरूरतें घटानी होंगी।

जयप्रकाश नारायण और अहिंसा एवं शांति

- हिंसक क्रान्ति हमेशा किसी न किसी रूप में तानाशाही को जन्म देती है। क्रान्ति के बाद विशेषाधिकार युक्त शासकों और शोषकों का नया वर्ग तैयार हो जाता है और समय के साथ-साथ जनता मोटे तौर पर एक बार पुनः प्रजा बनकर रह जाती है।

- दुनिया भर की हिंसक क्रान्तियों का इतिहास देखेंगे तो पता चलेगा कि पुराने समाज को तोड़ने में हिंसक क्रान्ति लंबे अर्से बाद सफल होती है और उसके बाद नए समाज के निर्माण में भी बहुत समय लग जाता है तथा निर्माण धीरे-धीरे ही हो पाता है। दूसरी तरफ अहिंसक क्रान्ति में पुराने समाज को बदलने और नए समाज को गढ़ने का काम साथ-साथ होता है।

जयप्रकाश नारायण और शिक्षा पद्धति

- युवक-युवतियों में ज्ञान और हुनर हासिल करने की सच्ची आकांक्षा होना, ज्यादा अच्छी और पहली आवश्यकता है। मुझे यह देखकर बहुत बड़ा धक्का लगा कि हमारे छात्रों में बहुत थोड़े से ही ऐसे हैं, जिनमें इस तरह की आकांक्षा है। शेष केवल कोई शैक्षिक उपाधि चाहते हैं।

- वास्तव में शिक्षा में कोई मौलिक परिवर्तन तब तक संभव नहीं है, जब तक या तो (क) उपाधियां समाप्त न कर दी जाएं या (ख) उपाधियों का रोजगार से कोई संबंध न रहे।

जयप्रकाश नारायण और अर्थशास्त्र

- आज के अर्थशास्त्रीय सिद्धान्त एक विशेष प्रकार की समाज व्यवस्था को ध्यान में रखकर बनाए गए हैं, जिस जीवन-पद्धति द्वारा शासित होते हैं, वह पद्धति है, असीम भौतिक समृद्धि की। लेकिन अर्थशास्त्र के और भी सिद्धान्त हो सकते हैं, जो ऐसी समाज व्यवस्था के लिए हों, जिसका नियमन भिन्न प्रकार के सामाजिक विधान द्वारा किया जा सकता है।

- हमारे देश के आर्थिक विकास की ऐसी प्रक्रिया होनी चाहिए, जो सबसे पिछड़े लोगों की ओर सबसे पहले ध्यान दे। सबसे पहले किनारे, किनारे पड़ गए या पिछड़े रह गए लोगों से शुरुआत करना जरूरी है। आज के विकास की प्रचलित विचारधारा इस प्रश्न की एकदम उपेक्षा करती है।

जयप्रकाश नारायण और राष्ट्रवाद

- जब तक प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में राष्ट्रवाद की भावना का विकास नहीं होगा तब तक देश का सर्वांगीण विकास नहीं हो सकता। भारत में सांस्कृतिक एकता होते हुए भी राजनीतिक एकता का अभाव है। ब्रिटिश शासन द्वारा सम्पूर्ण भारतीय प्रदेश पर अधिकार करने के बाद ही एक सरकार के अन्तर्गत राष्ट्रीय एकता का उदय हुआ है।

- राष्ट्रीय एकता के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति धार्मिक अन्धविश्वासों से बाहर निकलकर अपने अन्दर एक बौद्धिक व वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करें।

जयप्रकाश नारायण की लोकप्रिय किताबें

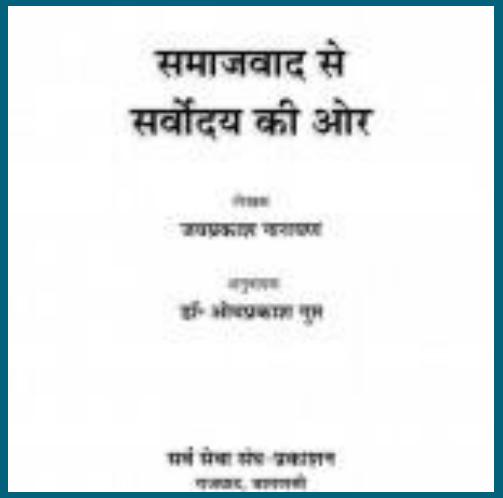

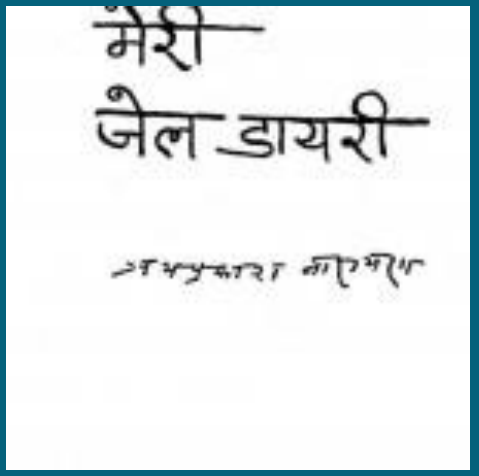

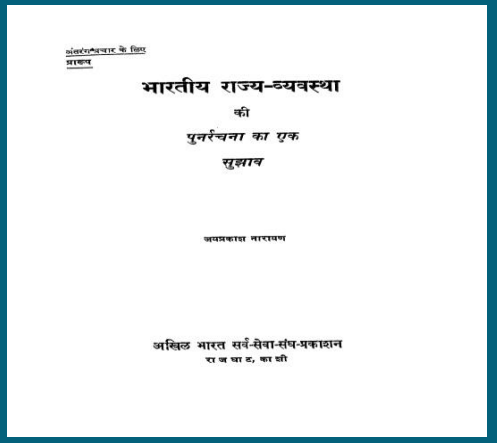

धन्यवाद !